

# डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 13, न्यू टेस्टामेंट में परमेश्वर के लोग , भाग 1

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह व्याख्यान 13 है, न्यू टेस्टामेंट में ईश्वर के लोग, भाग 1।

हमने पिछले सत्र का समापन यीशु को एक सच्चे इस्राएल के रूप में देखकर किया था।

इसलिए, अन्य विषयों की तरह, पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों के विषय का विकास भविष्यवाणी की अपेक्षा के माध्यम से सबसे पहले यीशु में अपनी पूर्णता पाता है। इसलिए, हमने देखा कि यीशु, सुसमाचारों में भी, यीशु एक तरह से अपने जीवन और सेवकाई में इस्राएल की कहानी को दोहरा रहे हैं। और अपने बचपन से लेकर मिस्र और वहाँ से बाहर की यात्राओं तक, और फिर प्रलोभन में, वह प्रलोभन जिसमें आदम और हव्वा असफल रहे, वह परीक्षा जिसमें वे पास नहीं हो पाए, और वह परीक्षा जिसमें इस्राएल असफल रहा, अब यीशु पास हो गए।

इसलिए, यीशु ही सच्चा इस्राएल है, जो इस्राएल को बनाने वाले वादे को पूरा करता है और उसका प्रतीक है तथा इस्राएल, उसके लोगों के लिए परमेश्वर के इरादे को मूर्त रूप देता है। लेकिन अब मैं चाहता हूँ, हम इसे कुछ अन्य अवसरों पर घटित होते देखेंगे, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप ध्यान दें कि हम सुसमाचारों में कई ऐसे पाठों को देखेंगे जो दर्शाते हैं कि कैसे यीशु इस्राएल के लिए परमेश्वर के वादे को पूरा करना शुरू करता है, विशेष रूप से भविष्यसूचक अपेक्षाएँ, अब लोगों का एक केंद्र इकट्ठा करके जो सच्चे लोग, परमेश्वर के नए लोग होंगे। और शुरुआती बिंदु, शायद सबसे स्पष्ट शुरुआती बिंदु, यीशु द्वारा 12 शिष्यों को चुनना है।

मुझे वापस जाकर पाठ पढ़ने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन आप सुसमाचारों में यीशु को 12 अनुयायियों या 12 शिष्यों का चयन करते हुए पाते हैं जो उनके लोग होंगे। फिर से, यह सिर्फ 12 लोगों को चुनकर छोटे समूहों को बढ़ावा देने वाला यीशु नहीं है। यीशु द्वारा 12 शिष्यों को चुनने का एक कारण है।

संख्या 12 स्पष्ट रूप से इस्राएल की 12 जनजातियों को दर्शाती है। तो, यह लगभग वैसा ही है जैसे संख्या 12, हम इसे भी देखेंगे, जब हम बाइबल के अंत में, प्रकाशितवाक्य 21 में नए यरूशलेम में पहुँचेंगे, संख्या 12 अक्सर अपने साथ महत्वपूर्ण विशेषता, परमेश्वर के लोगों का महत्वपूर्ण अर्थ लेकर चलती है। यह लगभग परमेश्वर के लोगों के लिए एक प्रतीकात्मक मूल्य का संकेत या अर्थ रखता है।

इसलिए, यीशु ने 12 शिष्यों या 12 अनुयायियों को चुना, जो परमेश्वर के पुराने नियम के लोगों के साथ निरंतरता का सुझाव देता है। 12 शिष्यों को इस्राएल के 12 गोत्रों के अनुसार बनाया गया है। इसलिए, यीशु एक ऐसा केंद्र बना रहे हैं जो नवीनीकृत इस्राएल, परमेश्वर के सच्चे लोग बनेंगे।

हम इसे यीशु द्वारा अपनी कलीसिया की स्थापना में भी देखते हैं, मत्ती अध्याय 16। मत्ती अध्याय 16 और पद 18, यह शब्द आपको सुसमाचारों में एकमात्र बार मिलता है, मत्ती, लेकिन सबसे पहले, मत्ती अध्याय 16 और पद 18 में, यीशु कहते हैं, मैं पीछे जाऊंगा और 17 पढ़ूंगा। यह पतरस के इस स्वीकारोक्ति के संदर्भ में है कि यीशु ही मसीहा है, जीवित परमेश्वर का पुत्र है।

और यीशु ने उत्तर दिया, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है, क्योंकि यह बात तुझे मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे स्वर्गीय पिता ने बताई है। और मैं तुझे बताता हूँ कि तू पतरस है। और इस चट्टान पर मैं अपना चर्च बनाऊँगा, और नरक के द्वार उस पर हावी नहीं होंगे।"

और फिर बाद में अध्याय 18 और श्लोक 17 में, इस संदर्भ में कि कैसे यीशु अपने शिष्यों को इस नई सभा के चर्च में पाप से निपटने के लिए निर्देश देते हैं, वे कहते हैं, सच में, मैं तुमसे कहता हूँ, चलो देखते हैं, श्लोक 17, मुझे खेद है, अध्याय 18, श्लोक 17। अगर वे सुनने से इनकार करते हैं, तो चर्च को बताएं। और अगर वे सुनने से इनकार करते हैं, यहां तक कि चर्च को भी, तो उनके साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप किसी बुतपरस्त या कर संग्रहकर्ता के साथ करते हैं।

अब, मैं जिस पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ वह है चर्च शब्द। मुझे लगता है कि हम इस पाठ के साथ अन्याय करते हैं जब हम इसे चर्च की हमारी आधुनिक अवधारणाओं के प्रकाश में बहुत अधिक पढ़ते हैं। इसलिए, हम एक इमारत की कल्पना करते हैं जिसमें लोग मिलते हैं, फिर उनके पास एक पादरी और एल्डर्स और डीकन और एक गायक मंडल और एक सचिव होते हैं, और वे एक भेंट लेते हैं और यह सब अच्छी तरह से संरचित होता है, वगैरह, वगैरह।

फिर भी इस बिंदु पर, यीशु ने जिस शब्द चर्च का उपयोग किया है, ग्रीक शब्द एक्लेसिया, एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग सेप्टुआजेंट में किया जाता है, जो पुराने नियम का ग्रीक अनुवाद है, जिसका उपयोग अक्सर परमेश्वर के लोगों की सभा, इस्राएल को संदर्भित करने के लिए किया जाता है। इसलिए मैथ्यू में चर्च नामक एक समूह का उल्लेख करके, मुझे नहीं लगता कि मैथ्यू इस बिंदु पर है, या यीशु हमारे आधुनिक समय के चर्चों और संरचनाओं और कुछ ऐसा कल्पना कर रहे हैं जिसमें एक सैद्धांतिक कथन और संविधान, वगैरह, वगैरह है। लेकिन बस, यीशु इस तथ्य को व्यक्त कर रहे हैं कि एक नई सभा है जिसकी वह कल्पना करते हैं, एक नई सभा जिसे वह 12 शिष्यों के इस नाभिक के आधार पर बना रहे हैं, एक नई सभा जो समानता में है, या सभा के साथ निरंतरता में है, चर्च की एक्लेसिया, मुझे खेद है, एक्लेसिया या परमेश्वर के लोगों की सभा, इस्राएल।

इसलिए एक बार फिर, मुझे लगता है कि यीशु ने जानबूझकर एक शब्द चुना है जिसका हम चर्च में अनुवाद करते हैं, लेकिन फिर से, इसे 21वीं सदी में चर्च के बारे में हमारी सोच के बारे में बहुत अधिक धारणाओं को उजागर न करने दें। चर्च शब्द एक बार फिर से वही है जो सेप्टुआजेंट में, पुराने नियम के ग्रीक अनुवाद में अक्सर इज़राइल के लिए इस्तेमाल किया जाता था, एक ऐसा शब्द जिसका मतलब बस एक सभा, लोगों का जमावड़ा हो सकता है। यीशु बस इस तथ्य को इंगित करता है कि वह अब पुराने नियम में अपनी सभा, अपने लोगों के साथ निरंतरता में लोगों की एक सभा बना रहा है, स्थापित कर रहा है या बना रहा है।

सुसमाचारों में एक अन्य पाठ या सुसमाचारों में एक अन्य धारणा जो यीशु के अपने चारों ओर केन्द्रित एक समूह बनाने, अनुयायियों के एक समूह को इकट्ठा करने, एक लोगों को बनाने के इरादे को प्रदर्शित करती है, जो उनके और उनके चारों ओर केन्द्रित है, वह यूहन्ना अध्याय 10 जैसे ग्रंथों में पाया जाता है, जहां यीशु खुद को सच्चे चरवाहे के रूप में वर्णित करते हैं जो अपनी भेड़ों को इकट्ठा करता है : यूहन्ना अध्याय 10 और श्लोक 7 और 11। यूहन्ना 10 और श्लोक 7 और 11 में, हम इसे पढ़ते हैं, इसलिए यीशु फिर से कहते हैं, सच मैं तुमसे कहता हूँ, मैं भेड़ों के लिए द्वार हूँ।

मुझसे पहले जितने भी लोग आए वे सब चोर और डाकू हैं, परन्तु भेड़ों ने उनकी नहीं सुनी। मैं द्वार हूँ। जो कोई मेरे द्वारा प्रवेश करेगा, वह उद्धार पाएगा।

वे आएं और बाहर जाएंगे और चारागाह ढूँढ़ेंगे। पद 11 में, यीशु कहते हैं, मैं अच्छा चरवाहा हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है।

मज़दूर चरवाहा नहीं है और भेड़ों का मालिक नहीं है। इसलिए, जब वह भेड़िये को आते देखता है, तो वह भेड़ों को छोड़कर उनके पीछे भागता है। लेकिन फिर, श्लोक 14 में, यीशु दोहराता है, मैं अच्छा चरवाहा हूँ।

मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और मेरी भेड़ें मुझे जानती हैं। अब, इसमें क्या खास बात है? मुझे लगता है कि एक बार फिर, यीशु सिर्फ चरवाहा होने के विषय पर बात नहीं कर रहे हैं। मुझे लगता है कि हम लूका के अध्याय 12 और श्लोक 32 में भी ऐसी ही भाषा देखते हैं, जहाँ यीशु कहते हैं, हे छोटे झुण्ड, मत डर, क्योंकि तुम्हारे पिता ने तुम्हें राज्य देने की कृपा की है।

इसलिए, यीशु अपने अनुयायियों के समूह को एक छोटे झुंड के रूप में संबोधित करते हैं। अब, वह खुद को चरवाहा नहीं कहते हैं, लेकिन इसका मतलब है कि वह इस झुंड का चरवाहा है। यीशु के कई दृष्टांत चरवाहे से संबंधित हैं।

आपको याद होगा कि लूका अध्याय 15 की शुरुआत एक चरवाहे से होती है जो बाहर जाकर एक खोई हुई भेड़ को ढूँढ़ता है। तो, इस सब में क्या खास है? एक स्तर पर, हम कह सकते हैं, क्या यीशु अपने लोगों के साथ अपने रिश्ते का वर्णन करने के लिए एक सामान्य रूपक का उपयोग कर रहे हैं, जैसे कि एक चरवाहा अपनी भेड़ों के साथ? खैर, हाँ, यह निश्चित रूप से सच है। हालाँकि, यदि आप यहजकेल की पुस्तक में वापस जाते हैं, तो यह दिलचस्प है कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ अपने रिश्ते का वर्णन एक चरवाहे के रूप में करता है और अपने लोगों को भेड़ों के रूप में वर्णित करता है।

मुझे यहजकेल के अध्याय 34 की आयत 20 का सिर्फ एक हिस्सा पढ़ने दीजिए। मैं सिर्फ इसके कुछ हिस्से पढ़ूँगा। इसकी शुरुआत होती है, प्रभु का वचन मेरे पास आया, हे मनुष्य के पुत्र, यहजकेल को संबोधित करते हुए, इस्राएल के चरवाहों के विरुद्ध भविष्यवाणी करो, भविष्यवाणी करो और उनसे कहो, प्रभु यहोवा यों कहता है, हाय तुम पर, इस्राएल के चरवाहों, जो सिर्फ अपना ही ध्यान रखते हो।

आपको चरवाहों को झुंड की देखभाल करनी चाहिए, नहीं करनी चाहिए। इसलिए, इस्राएल के नेताओं को चरवाहों के रूप में देखा जाता है, और इस्राएल को झुंड के रूप में देखा जाता है, भेड़ों की देखभाल की जानी चाहिए। इसलिए वह नेताओं को अनुपयुक्त चरवाहों के रूप में डांटता है जिन्होंने अपना काम नहीं किया है।

सातवें पद में, वह कहता है, इसलिए, हे चरवाहों, सुनो कि प्रभु क्या कहता है, क्योंकि मेरे जीवन की शपथ, प्रभु की यह वाणी है, क्योंकि मेरे झुंड में चरवाहा नहीं है। और इसलिए वे लूटे गए और सभी जंगली जानवरों का भोजन बन गए। और क्योंकि मेरे चरवाहों ने मेरे झुंड की खोज नहीं की, बल्कि झुंड के बजाय खुद की देखभाल की।

इसलिए हे चरवाहो, यहोवा का वचन सुनो। यहोवा ने यही कहा है। मैं चरवाहों के विरुद्ध हूँ, और मैं उनसे बदला लूँगा।

फिर, श्लोक 11, क्योंकि प्रभु यहोवा यों कहता है। मैं स्वयं अपनी भेड़ों को खोजूँगा और उनकी देखभाल करूँगा जैसे एक चरवाहा अपने बिखरे हुए झुण्ड की देखभाल करता है जब वह उनके साथ रहता है।

तो क्या मैं अपनी भेड़ों की देखभाल करूँगा? मैं उन्हें उन सभी जगहों से बचाऊँगा जहाँ वे बादलों और अंधकार के दिन बिखरी हुई थीं। मैं उन्हें राष्ट्रों से बाहर लाऊँगा और देशों से इकट्ठा करूँगा, और हम उन्हें उनके अपने देश में पहुँचाएँगे।

मैं उन्हें इस्राएल के पहाड़ों पर, घाटियों में और देश की सभी बस्तियों में चराऊँगा। मैं उन्हें अच्छे चरागाहों और पहाड़ों में चराऊँगा, और इस्राएल के पहाड़ी पहाड़ उनकी चरागाह होंगे। तो, ध्यान दें कि यहजकेल 34 में, पुनर्स्थापना के संदर्भ में, एक बार फिर, यहजकेल 34 36 और 37 के साथ जाता है, और पुनर्स्थापना के संदर्भ में, परमेश्वर उसका चरवाहा होगा।

परमेश्वर चरवाहा होगा। इस्राएल राष्ट्र उन भेड़ों की तरह है जो बिखरी हुई हैं, और परमेश्वर, चरवाहा, अपनी भेड़ों को इकट्ठा करेगा और उन्हें वापस लाएगा। वह उन्हें अपने पास इकट्ठा करेगा।

लेकिन दिलचस्प बात यह है कि अगर आप यहजकेल के अध्याय 37 पर वापस जाएं, पुनर्स्थापना और नई वाचा के संदर्भ में एक बार फिर आगे बढ़ें, तो लेखक क्या कहता है, इस पर ध्यान दें: मेरा सेवक, दाऊद, उनका राजा होगा, और वह होगा, और उन सभी का एक चरवाहा होगा। वे मेरे नियमों का पालन करेंगे और मेरे आदेशों का पालन करने में सावधान रहेंगे। तो जाहिर है, दाऊद खुद, फिर दाऊद का बेटा, दाऊद की वंशावली में एक राजा, परमेश्वर के लोगों का चरवाहा होगा।

अब, इस बात को ध्यान में रखते हुए, नए नियम के उन पाठों पर वापस जाएँ जिन्हें मैंने यीशु के चरवाहे के रूप में और उसके अनुयायियों के बारे में पढ़ा है, यीशु के साथ उसकी भेड़ों के रूप में, सच्चा चरवाहा भेड़ों को इकट्ठा करता है। मुझे लगता है कि हम यहजकेल 34 की पूर्ति पाते हैं।

अब परमेश्वर अपनी भेड़ों, अपनी बिखरी हुई भेड़ों को यीशु मसीह के माध्यम से इकट्ठा करना शुरू कर रहा है, जो अब अपनी भेड़ों, अपने अनुयायियों और अपने शिष्यों को इकट्ठा करता है।

दूसरे शब्दों में, यह जकेल 34 की पूर्ति में यीशु, एक नया झुंड, एक नया लोग इकट्ठा करना शुरू कर रहा है जो अब उसके चारों ओर केंद्रित होगा, जो उस पर भरोसा और विश्वास और आज्ञाकारिता में जवाब देगा, सच्चा चरवाहा जो यीशु मसीह है। एक और विषय जो पुराने नियम के वादों की पूर्ति में परमेश्वर के लोगों के विषय की ओर इशारा करता है, वह यूहन्ना अध्याय 15 और यीशु के साथ जुड़ा हुआ है जो दाख की बारी की देखभाल करता है। इसलिए, यदि आप यूहन्ना अध्याय 15 पर वापस जाते हैं, जो दाखलता और शाखाओं के बारे में एक लंबा खंड है, फिर से, मैं इसका केवल एक हिस्सा पढ़ूंगा, लेकिन यह यीशु के इस कथन से शुरू होता है, मैं सच्ची दाखलता हूँ, और मेरा पिता माली है।

वह मुझमें से हर उस शाखा को काट देता है जो फल नहीं देती, जबकि हर उस शाखा को जो फल देती है, वह छाँटता है ताकि वह और भी अधिक फल दे। तुम उन शब्दों के कारण पहले से ही शुद्ध हो जो मैंने तुमसे कहे हैं। इसलिए, जैसे मैं तुम में रहता हूँ, वैसे ही तुम भी मुझ में बने रहो।

कोई भी शाखा अपने आप फल नहीं दे सकती। उसे बेल में रहना चाहिए। और न ही तुम तब तक फल दे सकते हो जब तक तुम मुझमें नहीं रहते।

मैं दाखलता हूँ और तुम डालियाँ हो। यदि तुम मुझ में बने रहो और मैं तुम में, तो तुम बहुत फल फलोगे। मुझसे अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते।

यदि तुम मुझमें बने रहो, तो तुम एक डाली के समान हो जिसे फेंक दिया गया है। यदि तुम मुझमें नहीं बने रहते, तो तुम एक डाली के समान हो जिसे फेंक दिया गया और वह सूख गई। फिर उसे उठाकर आग में फेंक दिया गया।

यदि तुम मुझमें और मेरे वचन तुममें बने रहो, तो जो चाहो मांगो, वह हो जाएगा। मैं यहीं रुक जाऊंगा, लेकिन यीशु को बेल के रूप में, पिता को अंगूर के बागवान या माली के रूप में, और लोगों को बेल की शाखाओं के रूप में चित्रित करने पर ध्यान दें। फिर से, मुझे विश्वास है कि यीशु अपने लोगों के साथ अपने रिश्ते का वर्णन करने के लिए एक सुविधाजनक बागवानी रूपक का उपयोग करने से कहीं अधिक कर रहे हैं।

फिर से, बेल और शाखा का रूपक एक है, या बेल या दाख की बारी का रूपक वह है जिसे आप पुराने नियम में वापस इज़राइल का संदर्भ देते हुए पाते हैं। ऐसे कई ग्रंथ हैं जिन्हें हम देख सकते हैं, लेकिन उनमें से एक यशायाह अध्याय 5 और 1 से 7 है। यशायाह अध्याय 5 और श्लोक 1 से 7। मैं अपने प्रिय के लिए उसके दाख की बारी के बारे में एक गीत गाऊंगा। मेरे प्रिय के पास उपजाऊ पहाड़ियों पर एक दाख की बारी है।

उसने उसे खोदा, उसमें से पत्थर निकाले, और उसमें बेहतरीन पौधे लगाए। उसने उसमें एक निगरानी टावर बनाया और एक वाइन प्रेस भी बनाया। फिर उसने अच्छे अंगूरों की फसल की तलाश की, लेकिन उसमें केवल खराब फल ही मिले।

अब, हे यरूशलेम के रहनेवालों और यहूदा के लोगों, मेरे और मेरे दाख की बारी के बीच न्याय करो। मैंने अपने दाख की बारी के लिए जो कुछ किया है, उससे अधिक और क्या किया जा सकता था? जब मैं अच्छे अंगूरों की आशा करता हूँ, तो मुझे क्या मिलता है? यह केवल खराब अंगूर ही क्यों देता है? अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं अपने दाख की बारी के साथ क्या करने जा रहा हूँ। मैं इसकी बाड़ को हटा दूँगा, और यह नष्ट हो जाएगी।

मैं इसकी दीवार को तोड़ दूँगा। इसे रौंद दिया जाएगा। मैं इसे बंजर भूमि बना दूँगा, जहाँ न तो कोई खेती होगी और न ही कोई काँटेदार झाड़ियाँ और काँटे उगेंगे।

मैं बादलों को आज्ञा दूँगा कि वे इस पर वर्षा न करें। सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर की दाख की बारी इस्राएल राष्ट्र है। इसलिए अब परमेश्वर हमारे लिए इसका अर्थ बताता है।

और यहूदा के लोग दाखलताएँ हैं जिनसे वह प्रसन्न था। और उसने न्याय की आशा की, लेकिन उसने धार्मिकता के लिए खून-खराबा देखा, लेकिन उसने संकट की चीखें सुनीं। इसलिए, मुझे लगता है कि अब यहूदा 15 में जो हो रहा है वह यह है कि यीशु अब सच्ची दाखलता को बहाल करने के लिए आया है।

यशायाह 5 में सच्ची दाखलता ने फल देने से इनकार कर दिया था। अब यीशु परमेश्वर के लोगों की सच्ची दाखलता को बहाल करने के लिए आता है जो अब फल देगी यदि वे उसमें बने रहें। इसलिए अपने अनुयायियों को बुलाकर, एक बार फिर यीशु अपने अनुयायियों को संबोधित करते हुए, उन्हें दाखलता कहकर और यीशु को सच्ची दाख की बारी और परमेश्वर को दाख की बारी कहकर, मुझे लगता है कि यीशु यह सुझाव दे रहा है कि इस्राएल की सच्ची दाखलता जिसने फल देने से इनकार कर दिया था, अब नवीनीकृत हो रही है और वह फल देने के लिए बहाल हो रही है जिसे परमेश्वर ने यीशु मसीह में बने रहने और बने रहने के द्वारा पैदा करने का इरादा किया था।

वह उसके शिष्य हैं; यह केंद्रक मत्ती 16 और 18 के अनुसार नींव बनाएगा, जो परमेश्वर के लोगों की पूरी सभा के लिए नींव बनाएगा। कोई भी, मुझे लगता है कि इस सब के अंत में भी, मत्ती 18 के अंत में यीशु के महान आदेश को शामिल कर सकता है, मुझे खेद है, मत्ती 28 के अंत में, जहाँ वह उनसे कहता है कि जाओ और सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाओ और उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दो, उन्हें वह सब करना सिखाओ जो मैंने आज्ञा दी है। मैं युगों के अंत तक तुम्हारे साथ रहूँगा।

मुझे लगता है कि अब हम परमेश्वर के लोगों को पृथ्वी के सभी राष्ट्रों के लोगों को शामिल करते हुए विस्तारित होते हुए देखते हैं। इसलिए, यीशु की शिक्षा के निष्कर्ष में, विशेष रूप से सुसमाचारों में, मुझे लगता है कि हम पाते हैं कि यीशु मसीह नए सिरे से इस्राएल की शुरुआत है। यीशु मसीह ही सच्चा इस्राएल है, जो इस्राएल के वादों और इरादों और इस्राएल के लिए परमेश्वर के इरादे को पूर्णता और पूर्ति तक लाता है।

और फिर, यीशु मसीह के माध्यम से, परमेश्वर अब इस्राएल को नवीनीकृत करना और एक नई वाचा समुदाय, पूर्णता के युग में और पुराने नियम की भविष्यवाणी की अपेक्षाओं की पूर्ति में

परमेश्वर के नए लोगों का निर्माण करना शुरू कर रहा है। अब अंतर यह है कि परमेश्वर के लोगों में सदस्यता अब जातीयता तक सीमित या आधारित नहीं है, यानी, इस्राएल के राष्ट्र से संबंधित होना, लेकिन अब इसकी एकमात्र आवश्यकता यीशु मसीह में विश्वास या यीशु मसीह के साथ संबंध है, जो सच्चे यहूदी हैं, जो इस्राएल के भाग्य और इस्राएल के वादों की सच्ची पूर्ति हैं। तो फिर से, हमने देखा कि वादे शुरू होते हैं; मुझे खेद है, लेकिन परमेश्वर के लोगों का विषय पूरी सृष्टि के संदर्भ में आदम और हव्वा के साथ बहुत व्यापक रूप से शुरू होता है।

यह अब्राहम और इस्राएल राष्ट्र तक सीमित हो जाता है। यह यीशु मसीह के व्यक्तित्व में एक और संकीर्णता से गुजरता है, जो अब्राहम और इस्राएल के माध्यम से परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा करता है, लेकिन फिर इसका विस्तार होगा। अब तक इसका विस्तार होना शुरू हो गया है। यीशु ने अपने शिष्यों के रूप में अनुयायियों का एक केंद्र चुना, जो परमेश्वर के नए लोगों की नींव और केंद्र हैं जिन्हें यीशु बना रहे हैं, जो उनके इर्द-गिर्द केंद्रित हैं और उनके व्यक्तित्व में विश्वास के आधार पर उनसे संबंधित हैं।

इसलिए, यीशु ने अपने लोगों के केंद्र के रूप में बारह शिष्यों को चुना। वह एक चर्च, परमेश्वर के लोगों की एक नई सभा स्थापित करने के लिए आया है। वह सच्चा चरवाहा है जो अब परमेश्वर के लोगों की भेड़ों को इकट्ठा करता है।

वह सच्ची दाखलता है, और उसके लोग शाखाएँ हैं। इसलिए, यह यीशु मसीह के माध्यम से है कि एक नया समुदाय, एक नया इस्राएल, परमेश्वर के एक नए लोग अब पुराने नियम के परमेश्वर के लोगों और परमेश्वर के नए सिरे से बहाल लोगों की भविष्यवाणी की अपेक्षाओं की पूर्ति में बनाए गए हैं। अब, सुसमाचार से आगे बढ़कर पुस्तक की ओर बढ़ने के लिए, हम प्रेरितों के काम की पुस्तक से शुरू करेंगे और फिर एक तरह से विहित रूप से अनुसरण करेंगे।

हम पॉलिन साहित्य में कुछ उदाहरणों पर गौर करेंगे कि कैसे परमेश्वर के लोगों का विषय विकसित हुआ। मैं अन्य पत्रों में कुछ उदाहरणों पर गौर करूँगा और फिर प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर आऊँगा और यह परमेश्वर के लोगों के बारे में क्या कहता है। लेकिन प्रेरितों के काम की पुस्तक से शुरू करते हुए, हम परमेश्वर के लोगों के विस्तार को अन्यजातियों को शामिल करने के लिए काफी दिलचस्प पाते हैं।

लेकिन यह अध्याय 2 में परमेश्वर के वादों और यरूशलेम और यहूदिया में परमेश्वर के लोगों के साथ शुरू होता है, जो अंततः सामरिया और फिर पृथ्वी के छोर तक फैल जाता है, या कुछ अनुवादों में पृथ्वी के सबसे दूर के हिस्सों तक कहा गया है। प्रेरितों के काम अध्याय 1, श्लोक 8, एक तरह से, पुस्तक के बाकी हिस्सों के लिए एक मोटा खाका प्रदान करता है। इसलिए, अध्याय 2 यरूशलेम और फिर यहूदिया में शुरू होता है, और फिर यह अध्याय 8 में सामरिया में समाप्त होता है, मेरा मानना है, और फिर यह पृथ्वी के छोर तक फैल जाता है।

इसलिए, प्रेरितों के काम अध्याय 8 का अंत रोम में पॉल के साथ होता है, जो कि पॉल के दिनों में पृथ्वी का एक प्रकार का कहावती अंत होगा। लेकिन मुद्दा यह है कि यहाँ क्या हो रहा है, और यह प्रेरितों के काम अध्याय 1, पद 8 में प्रदर्शित होता है। प्रेरितों के काम अध्याय 1, पद 8 में, हम यह

कथन पाते हैं, तुम मेरे गवाह होगे, और मैं अपनी आत्मा तुम में डालूँगा। मैं तुम्हें अपनी आत्मा दूँगा, और तुम यहूदिया, यरूशलेम, और सामरिया और पृथ्वी के छोर तक मेरे गवाह होगे।

इनमें से ज़्यादातर वाक्यांश वास्तव में यशायाह की पुस्तक से लिए गए हैं। पवित्र आत्मा का दिया जाना, गवाह बनना, इस्राएल को परमेश्वर का गवाह बनना था, और उन्हें अंततः पृथ्वी के छोर तक गवाही देनी थी। पृथ्वी के छोर का वाक्यांश यशायाह की पुस्तक से शब्दशः लिया गया है।

तो, मुझे लगता है कि प्रेरितों के काम में जो चल रहा है, वह यह है कि प्रेरितों के काम एक स्तर पर, इस बात का प्रदर्शन है कि कैसे यशायाह के माध्यम से परमेश्वर के अपने लोगों को बहाल करने और अंततः उन लोगों को पृथ्वी के छोर तक विस्तारित करने के वादे पूरे होते हैं। तो, यह परमेश्वर के लोगों, मूल रूप से यरूशलेम और यहूदिया में उसके यहूदी लोगों से शुरू होता है, और फिर प्रेरितों के काम की पुस्तक मूल रूप से इस बात का विवरण है कि कैसे परमेश्वर की कलीसिया और परमेश्वर के वादे और कैसे उद्धार कम से कम यहूदी क्षेत्रों में लोगों के समूहों को गले लगाने के लिए आगे बढ़ता है जो अधिक से अधिक गैर-यहूदी हैं। तो फिर से, यह पॉल और रोम के साथ समाप्त होता है।

इस संदर्भ में एक और दिलचस्प विशेषता दो बातें हैं। पहला, आपके पास यरूशलेम, यहूदिया और फिर सामरिया का क्रम क्यों है? अगर आपको याद हो, तो कुछ भविष्यवाणियों के ग्रंथों में, परमेश्वर का इरादा दक्षिणी और उत्तरी दोनों राज्यों को बहाल करना था, जिसकी राजधानी सामरिया और यहूदा का दक्षिणी राज्य, यरूशलेम रहा होगा। तो, आपके पास यरूशलेम और यहूदिया, दक्षिणी राज्य, और फिर अंततः सामरिया में सुसमाचार की शुरुआत है, जो उत्तरी राज्य रहा होगा, और प्रेरितों के काम में वह दिलचस्प विवरण है कि कैसे प्रेरितों के काम 2 में पिन्तेकुस्त के दिन जो हुआ वह सामरिया में भी हुआ, ताकि आपके पास यशायाह और यहेजकेल और यिर्मयाह की पूर्ति में परमेश्वर के लोगों का एकीकरण हो, जो इस्राएल के 12 गोत्रों को बहाल करने और फिर से एकजुट करने वाली नई वाचा की आशा करते हैं।

इसलिए, उत्तरी और दक्षिणी जनजातियाँ पुराने नियम की भविष्यवाणियों की अपेक्षाओं के अनुरूप फिर से एकजुट हो जाती हैं। प्रेरितों के काम अध्याय 1 में एक और दिलचस्प बात यह है कि आपके पास 12वें प्रेरित का विवरण क्यों है। याद रखें, यहूदा दलबदल कर चुका है, इसलिए आप अनिवार्य रूप से प्रेरितों के काम, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान, और फिर प्रेरितों के काम अध्याय 1 की पुस्तक में जा रहे हैं, जहाँ आपके पास केवल 11 प्रेरित हैं। प्रेरितों के काम के लेखक ने 12वें को चुनने में इतनी बड़ी बात क्यों की? फिर से, यह परमेश्वर के लोगों की बहाली, इस्राएल की 12 जनजातियों की बहाली को दर्शाता है।

इसलिए, याद रखें, यीशु मसीह के 12 प्रेरितों को इस्राएल के 12 गोत्रों के अनुसार बनाया गया है। यह पुराने नियम की पूर्ति में अपने लोगों को नवीनीकृत और पुनर्स्थापित करने के यीशु के इरादे को दर्शाता है। और इसलिए, 12वें प्रेरित को चुनकर, हम पाते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना के बारे में यशायाह और अन्य पुराने नियम की अपेक्षाओं की पूर्ति दर्ज की जाने लगी है।

अब हम पाते हैं कि 12वें प्रेरित के चयन के साथ ही यह पूरा होना शुरू हो गया है और साथ ही यरूशलेम और सामरिया से सुसमाचार का प्रसार भी होने लगा है। और फिर, प्रेरितों के काम की पुस्तक के बाकी हिस्सों में, हमने कहा कि यह भी यशायाह के पुनर्स्थापना के कार्यक्रम के अनुरूप है जहाँ गैर-यहूदी आते हैं, जहाँ परमेश्वर की महिमा पृथ्वी के छोर तक, पृथ्वी के सबसे दूर के हिस्सों तक फैलती है। हम पाते हैं कि सुसमाचार पृथ्वी के सबसे दूर के हिस्सों तक पहुँच रहा है।

और फिर, अध्याय 28 का अंत पौलुस और राज्य के सुसमाचार के रोम तक पहुँचने के साथ होता है। इसलिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक स्वयं इस बात का विवरण प्रतीत होती है कि कैसे पुराने नियम के वादे और नए वाचा संबंध में परमेश्वर के लोगों की बहाली की अपेक्षाएँ अब पूरी होने लगी हैं। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद, यह समुदाय जिसे यीशु ने बनाना शुरू किया था, अब पुराने नियम के भविष्यसूचक पाठ और वादों की पूर्ति में इसका विस्तार होने जा रहा है।

एक और अंश जिसे हम पहले ही देख चुके हैं, वह है इफिसियों का अध्याय 2, श्लोक 11 से 22, जहाँ पौलुस ने शांति लाने के लिए क्रूस पर यीशु मसीह की मृत्यु के आधार पर यहूदियों और अन्यजातियों को एक नई मानवता में एकजुट करने की कल्पना की है। हम पहले ही कुछ अवसरों पर देख चुके हैं कि पौलुस की भाषा में यशायाह की पुस्तक के संकेत छिपे हुए हैं। परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना से संबंधित पाठ।

और इसलिए निकट और दूर की उस भाषा में से कुछ शांति ला रही है। और हमने कहा कि यह परमेश्वर के मंदिर की स्थापना के साथ समाप्त होता है जहाँ वह अपने लोगों के साथ रहता है। यह सब यशायाह के पुनर्स्थापना के वादों की पूर्ति में परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना को पूर्व निर्धारित करता है।

इसलिए कि यीशु मसीह के व्यक्तित्व में यहूदी और गैर-यहूदी का एकीकरण एक नई मानवता के निर्माण का हिस्सा है, परमेश्वर के लोगों को पुनर्स्थापित करने और नवीनीकृत करने के परमेश्वर के इरादे की पूर्ति में परमेश्वर के नए लोगों की पुनर्स्थापना, विशेष रूप से यशायाह की पुस्तक में, हमने पहले ही नई वाचा पर काफी समय बिताया है। और मैंने कहा कि नई वाचा परमेश्वर के लोगों की पूर्वधारणा करती है।

और जब आप यिर्मयाह और यहेजकेल के पास वापस जाते हैं, तो नई वाचा के अंश परमेश्वर के लोगों की भूमि पर पुनर्स्थापना के संदर्भ में हैं। उदाहरण के लिए, नई वाचा की पूर्ति द्वारा, पवित्र आत्मा के उपहार द्वारा उदाहरणित, 2 कुरिन्थियों 3 और 2 कुरिन्थियों 6 और पद 16 जो नई वाचा के पाठ को उद्धृत करता है। लेकिन मुद्दा यह है कि, यदि नई वाचा का उद्घाटन पहले ही हो चुका है, यदि नई वाचा अब एक वास्तविकता है और यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से अधिनियमित की गई है, यदि नई वाचा एक वास्तविकता है, तो परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना यिर्मयाह और यहेजकेल की पूर्ति में पहले से ही हो रही होगी।

तो एक बार फिर, नई वाचा, जो वाचा के सूत्र में सबसे स्पष्ट रूप से व्यक्त की गई है, मैं उनका परमेश्वर होऊंगा, और वे मेरे लोग होंगे, स्पष्ट रूप से सुझाव देता है कि एक नए लोगों को बहाल

करने, परमेश्वर द्वारा अपने लोगों, इस्राएल को बहाल करने, और उनके साथ एक नई वाचा के रिश्ते में प्रवेश करने के वादे, अब परमेश्वर के इन नए लोगों में पूरे हो रहे हैं जिन्हें यीशु ने इन बारह शिष्यों या प्रेरितों को इकट्ठा करके बनाना शुरू किया था। और अब, जैसा कि हमने प्रेरितों के काम में देखा, गैर-यहूदियों को शामिल करने के लिए विस्तार हो रहा है। अब परमेश्वर की बहाली के वादों की पूर्ति में नई वाचा के प्रकाश में दृश्य है।

अब, इसे दूसरे तरीके से कहें तो सवाल पूछने का एक और तरीका है, पुराने नियम में, यशायाह और यहजकेल में, वास्तव में, परमेश्वर के लोगों का पूरा विषय, परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना की भविष्यवाणियों की अपेक्षाओं में चरमोत्कर्ष पर है, अब जबकि उन्हें निर्वासन में ले जाया गया है, परमेश्वर उन वादों को कैसे बहाल करेगा? सवाल को दूसरे तरीके से कहने का तरीका यह है कि अब्राहम की सच्ची संतान कौन हैं? अब्राहम का सच्चा वंश कौन है? अब, पहली सदी और उससे पहले, अधिकांश यहूदी संप्रदायों ने इसका उत्तर दिया होगा, ठीक है, वे जो जातीय रूप से अब्राहम की संतान हैं। वे जो अब्राहम की शारीरिक वंशावली से संबंधित हैं। वे जो जातीय और राष्ट्रीय रूप से सच्चे इस्राएली हैं।

वे अब्राहम के वंशज हैं। लेकिन मैं उस पाठ पर वापस लौटना चाहता हूँ जिसे हमने फिर से पढ़ा है ताकि यह देखा जा सके कि पौलुस इसका उत्तर कैसे देता है। और वह है गलातियों का अध्याय 3। गलातियों के अध्याय 3 में, हम देखते हैं कि पौलुस वास्तव में इस प्रश्न का उत्तर दे रहा है।

अब्राहम के सच्चे बच्चे कौन हैं? क्योंकि यहूदी लोग जिनसे वह निपट रहा है, वे गैर-यहूदियों को खतना करवाने के लिए मजबूर करने की कोशिश कर रहे हैं, ताकि पुरुष खतना करवा सकें, बाकी सभी को कानून, भोजन के नियम और सब्त का पालन करना चाहिए, ताकि यह संकेत मिले कि वे शारीरिक और नैतिक रूप से परमेश्वर के सच्चे लोग हैं। और इसलिए, गलातियों में भी यह सवाल उठाया जा रहा है कि अब्राहम के सच्चे बच्चे कौन हैं? वे कौन हैं जो अब्राहम से किए गए वादों में भाग लेते हैं? और फिर पॉल इसका उत्तर देता है, उस सवाल का सीधा सामना करता है। इसलिए, अध्याय 3 की आयत 16 से शुरू करते हुए, पॉल कहता है कि वादे अब्राहम और उसके वंश से किए गए थे।

शास्त्र बीज से नहीं कहता, जिसका अर्थ बहुत से लोग हैं, बल्कि तुम्हारे बीज से कहता है, जिसका अर्थ एक व्यक्ति है, जो मसीह है। इसलिए, पौलुस मत्ती अध्याय 1 और पद 1 के अनुसार देखता है कि यीशु अब्राहम का पुत्र है। मत्ती के अनुसार, पौलुस भी यीशु को अब्राहम के सच्चे वंश के रूप में देखता है।

पॉल इसके बारे में ज़्यादा स्पष्ट है। अब्राहम का वंश कोई और नहीं बल्कि यीशु मसीह है। तो, फिर से वही संकीर्णता है।

यीशु मसीह के व्यक्तित्व में यह चरमोत्कर्ष पर पहुँचता है। यीशु अब्राहम के वंश की प्रतिज्ञा की सच्ची पूर्ति है। लेकिन ध्यान दें कि पॉल क्या करता है, एक पाठ जिसका हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं, जब आप गलातियों के अध्याय 3 के बिल्कुल अंत में पहुँचते हैं। गलातियों के अध्याय 3

की आयत 29 में, पॉल आगे कहता है, यदि तुम मसीह के हो, तो तुम, कलीसिया, गलातियों, अब्राहम के वंश और उसकी प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस हो।

तो, ध्यान दें कि यह कैसे काम करता है। सबसे पहले, अब्राहम के ज़रिए परमेश्वर के लोगों का वादा, अब्राहम के वंश का वादा, सबसे पहले, यीशु मसीह में पूरा होता है। फिर, यह मसीह से संबंधित होने के कारण उसके अनुयायियों को भी शामिल करता है।

तो, पॉल, पद 29 की कुंजी पद 16 है। यानी, अगर आप मसीह के हैं तो आप अब्राहम के वंशज हैं। अब्राहम का वंशज कौन है? अध्याय 3, पद 16।

तो पॉल क्या कह रहा है, मुझे लगता है कि गलातियों 3 में, परमेश्वर के सच्चे लोग, अब्राहम के सच्चे वंश, परमेश्वर के लोगों से अपने वादों को पूरा करने के लिए परमेश्वर का सच्चा इरादा, लोगों को लाने के लिए, अंततः यीशु मसीह में, अब्राहम के सच्चे वंश में, और फिर उसके लोगों में जो विश्वास में उसके हैं, जो अब्राहम के वंश भी बन जाते हैं, पूरा होता है। और फिर, मुझे इस तरह के पाठ में जो दिलचस्प लगता है वह यह है कि पॉल इसमें शामिल नहीं है, फिर से, वह गलातिया के चर्चों में अन्यजातियों को संबोधित कर रहा है। यह दिलचस्प है कि पॉल यह नहीं कहता कि आप अब्राहम के माध्यम से धन्य राष्ट्र हैं।

इसके बजाय, वह कहता है, तुम वास्तव में अब्राहम के वंशज हो क्योंकि तुम अब्राहम के सच्चे शारीरिक वंशज, यीशु मसीह से संबंधित हो। यह भी ध्यान दें, शायद जैसा कि हम यूहन्ना 15 में यीशु के शब्दों में पाते हैं, रोमियों अध्याय 11 में पौलुस द्वारा पेड़ और शाखा के रूपक का उपयोग किया गया है। फिर से, मैं इस खंड को पूरा नहीं पढ़ूंगा, लेकिन मैं इसके बारे में कुछ बातें बताना चाहता हूँ।

प्रकाशितवाक्य अध्याय 11 और श्लोक 13 से 24। मुझे नहीं लगता कि मैं यह सब पढ़ूंगा, लेकिन मैं श्लोक 16 से शुरू करूंगा। यदि पहले फल के रूप में चढ़ाए गए आटे का हिस्सा पवित्र है, तो पूरा बैच पवित्र है।

यदि जड़ पवित्र है, तो शाखाएँ भी पवित्र हैं। यदि कुछ शाखाएँ तोड़ दी गई हैं, और आप, एक जंगली जैतून की शाखा होते हुए भी, अन्य शाखाओं के बीच में कलमबद्ध हो गए हैं और अब जैतून की जड़ से मिलने वाले पौष्टिक रस में हिस्सा लेते हैं, तो अपने आप को उन अन्य शाखाओं से श्रेष्ठ न समझें। यदि आप ऐसा नहीं सोचते हैं, तो आप जड़ का समर्थन नहीं करते हैं, बल्कि जड़ आपका समर्थन करती है।

तुम उनसे कहोगे कि डालियाँ इसलिये तोड़ी गईं कि मैं साटा जाऊँ। माना कि वे अविश्वास के कारण तोड़ी गईं, और तुम विश्वास से बने हो। अभिमानी मत बनो, परन्तु काँपते रहो।

लेकिन अगर परमेश्वर ने प्राकृतिक शाखाओं को नहीं छोड़ा, तो वह आपको भी नहीं छोड़ेगा। अब, यह सब रोमियों 11 के संदर्भ में है कि एक बेल है, और दो शाखाएँ हैं। प्राकृतिक शाखाएँ और जंगली शाखाएँ हैं।

प्राकृतिक शाखाएँ परमेश्वर के लोग, इस्राएल हैं, और जंगली शाखाएँ अन्यजाति हैं। लेकिन वे दोनों एक ही बेल में कलम किए गए हैं ताकि आपके पास दो अलग-अलग लोग न हों। आपके पास परमेश्वर के एक लोग हैं जो रोमियों 11 में बिल्कुल एक ही बेल से जुड़े हुए हैं।

इसके अलावा, मुझे यह दिलचस्प लगता है कि पॉल पेड़ और शाखा के रूपक का उपयोग कर रहा है, जो एक बार फिर उसी भाषा को दर्शाता है जो आपको जॉन अध्याय 15 में शाखाओं और बेल के बारे में मिलती है। पॉल ने शायद इस रूपक को जानबूझकर चुना क्योंकि यह पुराने नियम में परमेश्वर के लोगों को संदर्भित करने के लिए इस्तेमाल किया गया है। लेकिन अब, परमेश्वर के सच्चे लोगों में प्राकृतिक शाखाएँ और जंगली शाखाएँ दोनों शामिल हैं जिन्हें कलम लगाया जा सकता है।

तो फिर, रोमियों 11 में आपके पास परमेश्वर के एक लोग हैं, दो अलग-अलग लोग नहीं। पॉलिन साहित्य में एक और दिलचस्प विशेषता जो परमेश्वर के लोगों के एक तत्व पर वापस जाती है जिस पर हमने पहले ही चर्चा की है, वह यह है कि पॉल अक्सर अपने पत्रों में अपने चर्चों को चुने हुए, चुने हुए या प्रियजनों के रूप में संदर्भित करता है। अब, हम उस भाषा को ले सकते हैं और इस बारे में सवाल पूछ सकते हैं कि क्या चुनाव की भाषा को बेहतर ढंग से समझा जाता है और क्या पूर्वनियति की भाषा को आर्मिनियन या कैल्विनवादी ढांचे के भीतर बेहतर ढंग से समझा जाता है।

ये बहुत महत्वपूर्ण, आवश्यक और वैध चर्चाएँ हैं। लेकिन हमारे उद्देश्यों के लिए, मैं बस इस शब्दावली को देखना चाहता हूँ और यह परमेश्वर के लोगों के बारे में क्या कहती है। उदाहरण के लिए, रोमियों के अध्याय 1 और पद 7 में, और इनमें से अधिकांश पाठ जिन्हें मैं पढ़ूँगा, उनमें से कुछ पत्रों की शुरुआत में हैं जब पॉल अपने लोगों को संबोधित करना शुरू करता है।

लेकिन रोमियों के अध्याय 1 की आयत 11, क्षमा करें, आयत 7, रोम में रहने वाले उन सभी लोगों के लिए जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उनके पवित्र लोग होने के लिए बुलाए गए हैं। इफिसियों के अध्याय 1 और आयत 3 और 4, इसलिए रोमियों के उस पाठ को बस एक पल के लिए अपने दिमाग में रखें, और हम वापस आकर संक्षेप में बताएंगे कि यह परमेश्वर के लोगों के विषय से कैसे संबंधित है। लेकिन इफिसियों के अध्याय 1, आयत 3 और 4, हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता की स्तुति हो।

ध्यान दें कि पिता, परमेश्वर और पिता की भाषा न केवल अच्छी पारिवारिक भाषा हो सकती है, बल्कि संभवतः वाचा की भाषा भी व्यक्त करती है। हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता की स्तुति हो, जिन्होंने हमें मसीह में हर आध्यात्मिक आशीर्वाद के साथ स्वर्गीय क्षेत्रों में आशीर्वाद दिया है, क्योंकि उन्होंने हमें दुनिया की नींव से पहले अपने प्यार में अपनी दृष्टि में पवित्र और निर्दोष होने के लिए चुना है। उन्होंने हमें यीशु मसीह के माध्यम से पुत्रत्व के लिए गोद लेने के लिए पूर्वनिर्धारित किया।

तो, फिर से ध्यान दें कि पौलुस अपने पाठकों का वर्णन ऐसे लोगों के रूप में करता है जिन्हें परमेश्वर ने दुनिया की नींव से चुना है और जिन्हें परमेश्वर प्यार करता है और उसके द्वारा पूर्वनिर्धारित किया गया है। और अंत में, हालाँकि हम कई अन्य लोगों की ओर इशारा कर सकते

हैं, अंतिम पाठ जिसे मैं देखना चाहता हूँ वह है कुलुस्सियों का अध्याय 3 और पद 12। ध्यान दें कि पौलुस कुलुस्सियों के मसीहियों, फिर से गैर-यहूदी मसीहियों या कुलुस्से में संबोधित करने वाले चर्च का वर्णन कैसे करता है।

इसलिए, परमेश्वर के चुने हुए लोगों के रूप में, पवित्र और प्रिय, अपने आप को करुणा, दया, नम्रता, सौम्यता और धैर्य से सुसज्जित करें। अब फिर से, एक बार फिर, हम पूछ सकते हैं, ओह, चुनाव का चयन करने का क्या मतलब है? क्या इसे आर्मिनियन या कैल्विनिस्टिक ढांचे या किसी अन्य ढांचे में बेहतर ढंग से समझा जाता है? लेकिन अगर आपको याद हो, तो परमेश्वर के लोगों को चुनने और उनसे प्यार करने की भाषा पुराने नियम में परमेश्वर के इस्राएल के साथ संबंधों की अभिव्यक्तियों से ही आती है। इस बात के प्रमाण के रूप में हम पहले ही जो एक पाठ पढ़ चुके हैं, व्यवस्थाविवरण अध्याय 7 और श्लोक 7 और 8 पर वापस जाएँ, प्रभु ने तुम पर अपना स्नेह नहीं रखा और तुम्हें इसलिए नहीं चुना कि तुम अन्य सभी लोगों से अधिक संख्या में थे, बल्कि इसलिए कि तुम सभी लोगों में सबसे कम थे।

लेकिन यह इसलिए था क्योंकि प्रभु ने तुमसे प्रेम किया और अपने पूर्वजों से की गई शपथ को पूरा किया, इसलिए उसने तुम्हें शक्तिशाली हाथ से बाहर निकाला और गुलामी की भूमि से, मिस्र के राजा फिरौन की शक्ति से छुड़ाया। तो, यह संदर्भों की इस श्रृंखला में बस एक और कड़ी है जो पुराने नियम में इस्राएल को संदर्भित करती है जिसे अब परमेश्वर के नए लोगों के रूप में चर्च पर लागू किया जाता है। इसलिए, मैं सुझाव दूंगा कि हमें शायद नए नियम में कहीं और देखना चाहिए जहाँ हम पाते हैं कि परमेश्वर अपने लोगों को चुनता है, अपने लोगों के लिए उसके प्रेम की भाषा।

हाँ, बहुत सी चीज़ें चल रही हैं, और हमें उसके द्वारा हमें प्यार करने की भाषा को उसके पूरे भावनात्मक प्रभाव में पढ़ना चाहिए। लेकिन साथ ही, हमें पुराने नियम में परमेश्वर के प्यार और उसके लोगों, इस्राएल के चयन के साथ संबंध भी देखना चाहिए। अब उसी तरह, परमेश्वर के नए लोग भी परमेश्वर द्वारा चुने गए और प्यार किए गए हैं।

हम गुलामी से मुक्ति के चित्रण में भी कुछ ऐसा ही देखते हैं। कुलुस्सियों 1 और 12-13. लेखक अपने लोगों का वर्णन इस तरह से करता है।

मैं वापस आकर पद 12 पढ़ना शुरू करूँगा। और पिता को धन्यवाद दो जिसने तुम्हें उसके पवित्र लोगों की विरासत और ज्योति के राज्य में हिस्सा लेने के योग्य बनाया है। हमने विरासत के साथ उस संबंध के बारे में बात की जो भूमि के उत्तराधिकार की भाषा है।

क्योंकि उसने हमें अंधकार के प्रभुत्व से छुड़ाया है और अपने प्रिय पुत्र के राज्य में ले आया है जिसमें हमें छुटकारा, अर्थात् पापों की क्षमा मिलती है। अब नए करार की उस भाषा पर फिर से ध्यान दें, पापों की क्षमा। लेकिन मैं उस छुटकारे की भाषा पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ कि उसने हमें अंधकार के प्रभुत्व से छुड़ाया है और हमें अपने पुत्र के राज्य में स्थानांतरित किया है जिसमें हमें छुटकारा मिलता है।

मैं आपको एक बार फिर सुझाव दूंगा कि यह छुटकारे की भाषा है, और हम इस पाठ्यक्रम में बाद में उद्धार के विषय और नए पलायन के बाइबिल धर्मशास्त्रीय विषय के संबंध में इस पर

अधिक बात करेंगे। लेकिन मैं जिस पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ वह है छुटकारे की भाषा और पलायन के साथ इसका संबंध। निर्गमन अध्याय 6 और श्लोक 6 और 7 एक ऐसा पाठ है जिसे हम पहले ही पुराने नियम के परमेश्वर के लोगों के विषय के विकास के संबंध में फिर से पढ़ चुके हैं।

परन्तु निर्गमन अध्याय 6, 6, 7 में इस्राएलियों से यह कहा गया है, कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं तुम्हें मिस्रियों के जूए के नीचे से निकालूंगा। मैं तुम्हें उनके दासत्व से छुड़ाऊंगा, और अपनी बाहें फैलाकर तुम्हें छुड़ाऊंगा।

इसलिए, पौलुस के पत्रों के बजाय यहाँ जो चल रहा है वह इस छुटकारे की भाषा के साथ लगता है, और यह अन्यत्र छुटकारे की भाषा के लिए भी सच हो सकता है। आप रोमियों 3 में भी पौलुस को छुटकारे के बारे में बताते हुए पाते हैं कि परमेश्वर मसीह के माध्यम से अपने लोगों की ओर से क्या पूरा करता है; उस पाठ में जिसे हम फिर से पढ़ते हैं, हम इस पर बाद में अधिक समय बिताएँगे। लेकिन रोमियों के अध्याय 3 में, पौलुस कहता है, परमेश्वर ने उसे प्रस्तुत किया, आइए देखें, श्लोक 23, क्योंकि सभी ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं, और सभी यीशु मसीह द्वारा आए छुटकारे के माध्यम से परमेश्वर की कृपा से स्वतंत्र रूप से धर्मी ठहराए जाते हैं।

यह पद 25 में उसके लहू के माध्यम से आता है। अब, मैं आपको सुझाव दूंगा कि यह छुटकारे की भाषा अंततः उस छुटकारे की भाषा पर वापस जाती है जो परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को मिस्र से छुड़ाने के संदर्भ में पाई जाती है, विशेष रूप से कुलुस्सियों के अध्याय 1:12 और 13 में संदर्भ जो मैंने पढ़ा है। तो, जिस तरह से परमेश्वर ने अपने लोगों को गुलामी से छुड़ाया, पुराने नियम में लोगों को गुलामी से छुड़ाया, उसी तरह से परमेश्वर अपने नए लोगों को छुड़ा रहा है।

परमेश्वर अपने नए लोगों को गुलामी और बंधन से मुक्त कर रहा है। वह कहता है कि तुम एक बार बंधन में थे, तुम एक बार अंधकार में गुलामी में थे, लेकिन अब उसने तुम्हें बाहर निकाल लिया है और अपने प्यारे बेटे के राज्य में स्थानांतरित कर दिया है जिसके माध्यम से तुम्हें मुक्ति मिली है। तो यह ऐसा है जैसे एक नए पलायन में, उसी तरह, परमेश्वर ने अपने लोगों को पहले पलायन में बाहर निकाला और उन्हें अपने लोगों के रूप में छुड़ाया, अब एक बार फिर वह अपने लोगों को बाहर निकाल रहा है और उन्हें अपने लोगों के रूप में बनाने के लिए एक नए पलायन में उन्हें छुड़ा रहा है।

मुझे लगता है कि पुराने नियम की पूर्ति में चर्च को परमेश्वर के लोगों के रूप में मानने की धारणा, इस्राएल के लिए परमेश्वर का इरादा और पुनर्स्थापित लोगों की भविष्यसूचक अपेक्षाएँ, इफिसियों के अध्याय 5 में, पौलुस के पत्रों में पाई जाती हैं। इफिसियों का अध्याय 5 एक लंबा खंड है जहाँ पौलुस पति और पत्नी के बीच के रिश्ते की तुलना मसीह और चर्च के बीच के रिश्ते से करता है। और इसलिए, मैं बस पढ़ूँगा; मुझे श्लोक 25 से शुरू करना चाहिए।

हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया, कि उसे वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए, और

अपने लिये तैयार करे, कि उसे एक तेजस्वी कलीसिया करके अपने सम्मुख उपस्थित करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई और दोष हो, वरन् पवित्र और निर्दोष हो। उसी प्रकार पति भी अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। क्योंकि कोई भी अपनी देह से बैर नहीं रखता, वरन् अपनी देह का पालन-पोषण और पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह कलीसिया का करता है।

क्योंकि हम उसके शरीर के अंग हैं। इस कारण से, एक पुरुष अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी के साथ जुड़ जाएगा, और वे दोनों एक तन हो जाएँगे। यह एक गहरा रहस्य है, लेकिन मैं मसीह और कलीसिया के बारे में बात कर रहा हूँ।

अब, एक बार फिर, इस अंश के बारे में बहुत सी बातें कही जा सकती हैं, लेकिन मैं जो कहना चाहता हूँ वह यह है कि यह दिलचस्प है कि पॉल यह तर्क दे रहा है कि पत्नियों और पतियों को एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए और एक-दूसरे से कैसे संबंध रखना चाहिए, यह बताने से कहीं ज़्यादा, वह चर्च के साथ यीशु के रिश्ते की तुलना एक पति के अपनी पत्नी के साथ रिश्ते के रूप में करता है, या यीशु के अपने लोगों के साथ रिश्ते के रूप में, इसे प्यार करने और इसका पालन-पोषण करने में, पति को अपनी पत्नी के लिए क्या करना चाहिए, इसकी तुलना करता है। हालाँकि, जो दिलचस्प है, वह पुराने नियम में पुरानी वाचा के तहत परमेश्वर और उसके लोगों के बीच का रिश्ता है, जिसे अक्सर पति और उसकी पत्नी के रिश्ते के रूप में वर्णित किया जाता है। यही कारण है कि जब भी इस्राएल भटकता है, तो इसे अक्सर व्यभिचार, बेवफ़ाई के रूप में दर्शाया जाता है।

इस्राएल को अक्सर एक बेवफ़ा पत्नी के रूप में देखा जाता है, क्योंकि परमेश्वर और इस्राएल के बीच वाचा के रिश्ते को अक्सर पति और उसकी पत्नी के बीच वाचा के रिश्ते के रूप में देखा जाता है। इसलिए अब, पौलुस द्वारा पति और पत्नी के उस रूपक को चर्च में स्थानांतरित करने से, ऐसा लगता है जैसे वह फिर से कह रहा है कि परमेश्वर के नए लोगों के बीच निरंतरता है जो अब बनाए गए हैं और मसीह के व्यक्तित्व के इर्द-गिर्द केंद्रित हैं। उसके और परमेश्वर के लोगों, इस्राएल के बीच निरंतरता है।

अब, यहाँ परमेश्वर की नई दुल्हन है। यहाँ परमेश्वर की नई पत्नी है। यहाँ यीशु की दुल्हन, उसकी पत्नी, उसके लोग, कलीसिया है।

उदाहरण के लिए, आप इसे यशायाह के अध्याय में पाते हैं... ऐसे कई पाठ हैं, खास तौर पर यशायाह में। यशायाह अक्सर दुल्हन और विवाह तथा विवाह संबंधी कल्पना का उपयोग करके चर्च के साथ परमेश्वर के रिश्ते का वर्णन करने का शौकीन है। इस्राएल राष्ट्र के साथ परमेश्वर का रिश्ता।

और फिर, व्यभिचार की कल्पना। आप इसे यशायाह, यहजेकेल और अन्य जगहों पर पाते हैं, जहाँ इस्राएल परमेश्वर के प्रति विश्वासघात करता है। लेकिन यशायाह अध्याय 54 में, हमें एक उदाहरण मिलता है कि कैसे परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना... यशायाह 54 एक बार फिर,

भविष्य में परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को पुनर्स्थापित करने की भविष्यवाणी है, अब जब वे निर्वासन में हैं।

अध्याय 54 में, "हे बांझ स्त्री, तू जो कभी बच्चे को जन्म नहीं देती, गा। हे बांझ स्त्री, तू जो कभी प्रसव पीड़ा में नहीं पड़ी, जोर से गा और जयजयकार कर, क्योंकि त्यागी हुई स्त्री के बच्चे, पतिव्रता स्त्री के बच्चों से अधिक हैं, यहोवा की यही वाणी है। अपने तम्बू का स्थान बढ़ा, अपना तम्बू फैला, और पर्दों को चौड़ा कर।

पीछे मत हटो; रस्सियों को बढ़ाओ और अपनी खूंटियों को मजबूत करो, क्योंकि तुम दाहिनी ओर बाईं ओर फैलोगे। तुम्हारे वंशज राष्ट्रों को निकाल देंगे और उनके उजड़े हुए शहरों में बसेंगे। दरअसल, मैं बस थोड़ा नीचे जाना चाहता हूँ।

पद 4, मत डर, तू लज्जित न होगी। अपमान से मत डर, और न तू अपमानित होगी। तू अपनी जवानी की लज्जा न भूलेगी।

और अपने विधवापन की निन्दा को फिर कभी याद न करो। इसलिए अब इस्राएल विधवा के रूप में देखा जाता है, अब जब वे निर्वासन में चले गए हैं। श्लोक 5, क्योंकि तुम्हारा निर्माता, परमेश्वर, तुम्हारा पति है।

सर्वशक्तिमान यहोवा उसका नाम है। इस्राएल का पवित्र परमेश्वर तुम्हारा उद्धारकर्ता है। उसे सारी पृथ्वी का परमेश्वर कहा जाता है।

तो अब परमेश्वर को पति के रूप में देखा जाता है जो अपने लोगों को वापस बुलाएगा जो विधवा हो गए हैं, लेकिन अब वह अपने लोगों को वापस बुलाएगा। तो, इसके पीछे एक बार फिर से विवाह या विवाह की कल्पना है। परमेश्वर पति है, और इस्राएल पत्नी है।

यह आगे भी संकेतित किया जा सकता है, कम से कम आंशिक रूप से, श्लोक 11 और 12 में, एक श्लोक जिसे हम पहले ही पढ़ चुके हैं। तूफ़ानों से पीड़ित और सांत्वना रहित शहर, मैं तुम्हारे पत्थरों को फ़िरोज़ा से और तुम्हारी नींव को लापीस लाजुली से फिर से बनाऊँगा। मैं तुम्हारे किलों को माणिकों से, तुम्हारे द्वारों को चमचमाते रत्नों से और तुम्हारी सभी दीवारों को कीमती पत्थरों से बनाऊँगा।

और तुम्हारे बच्चे प्रभु द्वारा सिखाए जाएँगे और उनकी शांति महान होगी। दूसरे शब्दों में, यरूशलेम की पुनर्स्थापना को कीमती रत्नों के रूप में चित्रित करके, कल्पना का एक हिस्सा दुल्हन की कल्पना भी हो सकती है, कि अब आप यरूशलेम को दुल्हन के रूप में सजा हुआ और उसके पति के लिए ये सभी कीमती रत्न देखते हैं। लेकिन स्पष्ट रूप से, यशायाह के अध्याय 54 में, इसके पीछे परमेश्वर के इस्राएल के साथ संबंध, उनके साथ उसकी वाचा के संबंध की तुलना, एक पति और उसकी पत्नी के बीच के संबंध के रूप में की गई है।

और इसलिए, इफिसियों 5 में पौलुस ने विवाह की कल्पना और पति और पत्नी की कल्पना का उपयोग करके यीशु के चर्च से रिश्ते को संदर्भित किया, पौलुस ने नए नियम के परमेश्वर के लोगों,

चर्च और पुराने नियम के परमेश्वर के लोगों के बीच एक संबंध स्थापित किया। फिर से, अपने लोगों के लिए परमेश्वर का इरादा। पुराने नियम में अपने लोगों, अपने लोगों इस्राएल के लिए परमेश्वर का इरादा, पाप के कारण निर्वासन के कारण बर्बाद हो गया था, लेकिन परमेश्वर के लोगों की बहाली की उम्मीद अब भविष्यवाणी की गई है, अब परमेश्वर के नए लोगों, चर्च में पूरी होती है।

और पॉल यह दर्शाता है कि मुझे लगता है, इन सभी असंख्य संबंधों के द्वारा, यहूदी और गैर-यहूदी के एकीकरण का वर्णन करने के लिए भाषा और पुराने नियम के पाठ का उपयोग, नई वाचा की भाषा, मैं तुम्हारा परमेश्वर बनूंगा, तुम मेरे लोग होगे, अब चर्च पर लागू होता है, यह तथ्य कि चर्च अब्राहम का सच्चा बीज है, पेड़ की शाखा के रूपक का उपयोग, चुने जाने और प्यार किए जाने की भाषा, गुलामी से मुक्ति की भाषा, और अब पति और पत्नी का रूपक, सभी भाषाएँ जो पुराने नियम में इस्राएल के लोगों को संदर्भित करने के लिए पाई जाती हैं, अब नए नियम, परमेश्वर के नए वाचा के लोगों को संदर्भित करने के लिए ली जाती हैं। इसलिए चर्च को कम से कम किसी स्तर पर और किसी तरह से परमेश्वर और इस्राएल के लोगों के साथ निरंतरता के रूप में देखा जाना चाहिए, लेकिन मैं आपको फिर से याद दिलाना चाहूंगा कि मुख्य कारक, मुझे लगता है कि पॉल के लिए भी, विशेष रूप से जैसा कि गलातियों के अंश, गलातियों 3 में देखा गया है, यह है कि यीशु मसीह, सबसे पहले, एक सच्चा इस्राएल है।

और फिर उसके लोग जो उसके चारों ओर इकट्ठा होते हैं, जो विश्वास में उसके साथ एकजुट होते हैं, फिर उसी तरह परमेश्वर के सच्चे लोग बन जाते हैं। और हमने देखा है कि इसका मुख्य तत्व पुराने और नए नियम के बीच हुआ बदलाव है जिसमें अब राष्ट्रीय और जातीय रूप से परिभाषित परमेश्वर के लोगों से संबंधित होना नहीं है, बल्कि अब परमेश्वर के सच्चे लोगों में सदस्यता है, परमेश्वर के लोगों की सच्ची पहचान यीशु मसीह में विश्वास है। इसलिए, अगले भाग में, हम पौलुस के पत्रों से आगे बढ़ेंगे, और हम प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में समाप्त होने वाले नए नियम के बाकी पाठ को देखेंगे जिसने परमेश्वर के लोगों के इस विषय को और विकसित किया।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह व्याख्यान 13 है, न्यू टेस्टामेंट में ईश्वर के लोग, भाग 1।